दिनांक :- 15-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड, प्रतिष्ठा इतिहास
चतुर्थ पत्र

इकाई :- दो- प्रथम अफीम युद्ध (1839)

17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को चीन के प्रान्त कैंटन में अपने व्यापारिक संस्थान स्थापित करने का अधिकार प्राप्त हो गया। 18वीं शताब्दी के अंत तक कैंटन अधिकांशतः आंग्ल-व्यापार हो गया जिस पर ईस्ट इंडिया कंपनी का अधिकार था। कंपनी वहाँ मुख्य रूप से अफीम का व्यापार करती थी। 1840 और 1856 में चीन के अंग्रेजों के साथ युद्ध हुए। ये युद्ध मूलतः अफीम के प्रश्न को लेकर लड़े गए थे, अतः इन्हें अफीम युद्ध (Opium War) कहा जाता है। इनके मुख्य कारण निम्न लिखित थे।

(1) पश्चिम के साथ प्रारम्भिक संबंध (Early Relations with the West)- कैंटन (Canton) और मकाओ (Macao) को छोड़कर 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध से 1842 तक चीन में विदेशियों का द्वार बंद था। 1757 के पहले चीनी सरकार ने अनिच्छा पूर्वक विदेशियों के चीन में प्रवेश करने की आज्ञा दी। सर्वप्रथम वहाँ सामुद्रिक मार्ग से पुर्तगाली आए। 1516 में जब उनके जहाज चीन पहुँचे तो अन्य यूरोपीय भी व्यापार की खोज में चीन पहुचने लगे। 1575 में स्पेनी, 1604 में डच, 1637 में अँग्रेज एवं 1784 में अमरीकी चीन पहुँचे। इस समय जब इन देशों के जहाज चीन के दक्षिण भाग में पहुँच रहे थे तो प्रशांत महासागर होकर रूस भी वहाँ पहुँचने के प्रयास में लगा हुआ था। 1689 में चीन ने विदेशियों के साथ व्यापार का एक निश्चित क्षेत्र निर्धारित करने के लिए नरचिंस्क की संधि (Treaty of Nechinsk) की।

Scanned with CamScanner

इस संधि ने रूस को भी पीकिंग में एक दूतमंडल भेजने का अधिकार दिया इस तरह अन्य पश्चिमी देशों से भिन्न स्तर पर रूस को रखा गया।
नवागन्तुकों के साथ भद्र व्यवहार चीन की गौरवपूर्ण परम्परा रही है। अतः प्रारम्भ में विदेशी व्यापारियों को कई कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। किंतु शीघ्र ही पोर्तुगाली व्यापारियों के नापाक इरादे स्पष्ट हो गए। वे व्यापार की अपेक्षा लूट-खसोट में अधिक दिलचस्पी लेने लगे। अतः उनकी व्यापारिक गतिविधियों को मकाओ तक सीमित कर दिया गया। स्पेनियों को प्रारंभ में ही डाँट-फटकार दिया गया। अतः उन्होंने व्यापारिक संबंध स्थापित करने का प्रयास छोड़ दिया। डचों ने पहले तो पेस्काडोरस और बाद में फार्मोसा में बसने का प्रयास किया। जहाँ वे कुछ समय तक रहे भी चीनी अंग्रेज व्यापारियों के हित खतरे में दिखाई देने लगे।
इसी बीच मिंग (Ming) शासकों को उत्तर की ओर से मंचुओं

के आक्रमण तथा आन्तरिक विद्रोहो का सामना करना पड़ा इसमें वे नितान्त असफल रहे। देश में मंचू राजवंश कायम हो गया। मंचू सरकार ने 1665 में एक फरमान द्वारा चीन में विदेशियों के प्रवेश को सीमित कर दिया। 1757 में विदेशियों का व्यापार केवल कैंटन बन्दरगाह मेंही सीमित कर दिया गया। व्यापारियों के अतिरिक्त चीन में ईसाई धर्म प्रचारक भी थे। 13वीं से 16वीं शताब्दियों तक अनेक रोमन कैथोलिक धर्म-प्रचारक चीन आए। सबसे पहले तो जेसुएट आए। वे अपने को दर्शनिक तथा वैज्ञानिक बतलाकर ईसाई धर्म का प्रचार करते रहे। उनका नेता मटेओ रिसी (Matteo Ricci) था जो 1601 में पीकिंग में बस गया था। वहाँ उसके सहयोगियों तथा उत्तराधिकारियों ने राजदरबार से सम्पर्क स्थापित कर लिया। वे कुछ उच्च पदाधिकारियों को ईसाई धर्म में दीक्षित करने में सफल रहे। जेसुएटों ने विभिन्न प्रान्तों

भी अनेक चीनियों को ईसाई बनाया। जेसुइटों के बाद फ्रांसीसकन (Franciscans) और डामेनिकन (Dominicans) धर्म प्रचारक चीन में आए। जेसुइटों से उनकी पटती नही थी विभिन्न धर्म-प्रचारकों के अपने-अपने स्वार्थ थे। कुछ तो पीकिंग और प्रान्तों में उच्च पदों पर भी पहुच गये थे।

चीन में धर्मप्रचारकों की गतिविधियाँ संतोषजनक नहीं थी वे आपस में भी लड़ते रहते थे! ईसाई धर्म प्रचारक अपने अनुयायियों को पोप की सत्ता मानने को कहते थे। चीनी सम्राट की सर्वोच्चता में इससे आँच आती थी। अतः 1724 में सम्राट ने एक फरमान द्वारा ईसाई धर्म-प्रचारकों को ईसाई धर्म-प्रचार करने से मना कर दिया।

कुछ धर्म-प्रचारकों को पीकिंग में रहने की अनुमती दी गई। किंतु उन्हें धर्म-प्रचार करना नहीं था। कुछ धर्म प्रचारक जिन्हें बाहर जाने का आदेश दे दिया गया था।

Scanned with CamScanner

प्रांतों में गुप्त रूप से धर्म-प्रचार करते ही रहे। 1820 तक छह बिशप, दो सहयोगी (coadjutors) तेईस विदेशी धर्म-प्रचारक मंडलियाँ, अस्सी देशी पुरोहितों एवं दो लाख पन्द्रह हजार धर्मान्तरित (converts) थे।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पश्चिमी देशों से चीन के प्रारंभिक सम्पर्क व्यापारिक और धार्मिक थे। 1842 तक विदेशी व्यापारियों को केवल कैंटन और मकाओ में व्यापार करने की अनुमति थी। पोर्तुगाल, हालैंड और इंगलैंड ने पीकिंग से प्रत्यक्ष राजनीतिक संबंध स्थापित करने की अनुमति प्रयास किया, किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली। उनके दूत कर या भेंट-उपहार देते थे। सम्राट के सम्मुख उपस्थित होने पर उन्हें नौ बार झुक कर दंडवत करना पड़ता था। इस प्रथा को क्यौतो (Kowtow: The nine prostrations) कहते थे। अंग्रेज दूत इसे अपमान जनक प्रथा समझते थे।

Scanned with CamScanner

और दंडवत करने से कतराते थे। ईसाई धर्म-प्रचारकों के लिए तो चीन का द्वार लगभग बंद ही कर दिया गया था। किंतु कुछ कैथोलिक धर्म-प्रचारक चीन में रह गए। 1844 में उन पर लगे प्रतिबंध उठा लिये गये और वे पुनः अपने धर्म प्रचार में लग गए।

(2) कैंटन में व्यापार (The canton Trade) - विदेशी व्यापारी कैंटन में व्यापार करते थे, किंतु उन्हें साल भर वहाँ रहने की इजाजत नहीं थी। प्रायः ग्रीष्म ऋतु में उन्हें मकाओ चला जाना पड़ता था। मकाओ पोर्तुगालियों के पट्टे में था, फिर भी वे चीन के क्षेत्राधिकार में था। विदेशी व्यापारियों को अपने बीबी-बच्चों को मकाओ में छोड़कर कैंटन में व्यापार करना पड़ता था।

चीनी अधिकारी ही व्यापार-शर्तों को निर्धारित करते थे। जहाँ तक शुल्क का प्रश्न है प्रायः यह काफी होता था।

Scanned with CamScanner